

प्रवेश सं० २९४९५

विषय: अ. अ. अ. अ.

क्रम सं०

नाम सत्यनारायण प्रजा

पन्थकार

पत्र सं० ५-६

श्लोक सं०

अक्षर सं० (पंक्तौ) ३८ - पंक्ति सं० (पृष्ठे) १३

आकार: ११, ४०, ५०

लिपि: १, २

आधार: अ. अ.

वि० विवरणम्

०००५९९

०. ४
३६५

गी० एम० यू० पा०--१९ एम० सी० डी०--१९५१--४० २००



দাসী কাক কবচা মাথায় হাথোকা দিবে। যাহা শ্রমতঃদ্রুত হারে ছইয়াছে ॥ ৭ ॥ তাহা বিপদাঙ্কান দিন দিল
রা। কবে জিনো সেই কবে সাবধানে ॥ গিয়া জানিলে মিত্রি বাক্যে বাণী ॥ তাহা হইবে কত সাধকেন সহ ॥
একে একে কবে কবে গৌরব পাই ॥ পত্না দৃষ্ট হইলো সুপথে ॥ আমার ছই লোক লে পত্না হই বিপাকে
অনন্ত আশ্রয় কারি হইলো দত্ত জনকে ॥ হইলো আশ্রয় হইলো দেউতা হইলো ॥ দিয়া গুণ পূর্ব
কবচা হইলো প্রকটকার ॥ হইলো যাহা দিয়া হইলো বৈশাখ দি ॥ বাহ্যে হইলো বৈশাখ দি ॥ নিম্নে
হইলো পান সুপান ॥ হইলো সমস্তের সমস্তে আশ্রয় ॥ কবচা হইলো বাণী দিবে দিহা দেউতা
মিকশা দিবে নক্ষত্রাঙ্গি ॥ নক্ষত্রাঙ্গি কবচা হইলো বান ॥ ক্ষেমাঙ্গি সদাগর ॥ ক্ষেমাঙ্গি
জান ॥ জিনো দিহা কবচা বন্যায় ॥ হইলো বৈশাখ দি ॥ জিনো ॥ বৈশাখ দি ॥ বৈশাখ দি ॥ বৈশাখ দি ॥
পূর্ব লোক ॥ সপ্তকোণে গায় ॥ জেনবৈ বন্যায় ॥ বৈশাখ দি ॥ বৈশাখ দি ॥ বৈশাখ দি ॥ বৈশাখ দি ॥
জিনো ॥ জিনো ॥ জিনো ॥ জিনো ॥ জিনো ॥ জিনো ॥ জিনো ॥ জিনো ॥ জিনো ॥ জিনো ॥
জিনো ॥ জিনো ॥ জিনো ॥ জিনো ॥ জিনো ॥ জিনো ॥ জিনো ॥ জিনো ॥ জিনো ॥ জিনো ॥
জিনো ॥ জিনো ॥ জিনো ॥ জিনো ॥ জিনো ॥ জিনো ॥ জিনো ॥ জিনো ॥ জিনো ॥ জিনো ॥

[illegible]

